■ बेताल पचीसी

राजन्! न्याय करने वालों के बारे में न्याय कौन करेगा?

जब अदालती आदेश से शहर उजाड़ा जा रहा था, तब विक्रम बेताल को कंधे पर लादे शहर में दाखिल हुआ, बेताल की जिद थी कि देश की राजधानी दिल्ली को करीब से देखा जाये। इसी दौरान सुप्रीम कोर्ट का फरमान आया था कि रिहायशी इलाकों में चल रही फैक्ट्रियों को बन्द कर दिया जाये। लाखों लोगों के भाग्य का फैसला हो चुका था। विक्रम बेताल के साथ दिल्ली के व्यस्ततम चौराहे आई.टी.ओ. पर खड़ा था। गाड़ियों के धुएं मे आंखें जल रहीं थीं। दम घुट रहा था। शहर में कारखाने बन्द होने की चर्चा जोरों पर थी। बेताल सुप्रीम कोर्ट के कारखानाबन्दी के आदेश के निहितार्थ और फलितार्थ को समझने की कोशिश कर रहा था। उसके मन में तमाम सवाल उमड़-घुमड़ रहे थे। जब बेताल से रहा न गया तो उसने विक्रम से पूछना ही उचित समझा।

बेताल : न्याय करने का अधिकार किसको है? क्या अन्याय को न्याय का जामा पहनाया जा सकता है? क्या आम जन को यह अधिकार नहीं होना चाहिए कि न्याय करने वालों के भाग्य के बारे में वह न्याय करे?

विक्रम : तुम हमेशा पहेलियां बुझाते हो, न्याय और अन्याय की परिभाषाओं को जानने के पीछे तुम्हारा मकसद क्या है?

बेताल : राजन, मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या लाखों लोगों को घर-परिवार सहित दिल्ली से बाहर सिर्फ इसलिए ढकल दिया जाये कि वे प्रदूषण फैलाने वाली फैक्ट्री में काम करते हैं। क्या इन लोगों का कसूर यह है कि रोजगार की तलाश में भटकते हुए अपनी जगह-जमीन से उजड़कर ये लोग दिल्ली आ गये? जब तक यहां इनकी जरूरत थी तो इनका खून निचोड़ा गया। अब कहा जा रहा है कि ये तो घुमन्तू प्रवृत्ति के लोग हैं कहीं भी काम कर लेंगे। अब इन्हें यहां से खदेड़ा जा रहा है।

विक्रम : राजकाज चलाने में कुछ अलोकप्रिय फैसले तो लेने ही पड़ते हैं। प्रदूषण कम करने के लिए यह फैसला लिया गया है कि 'नॉन कन्फार्मिंग' क्षेत्रों से कारखानों को हटाया जाये।

बेताल : राजन, तुम्हारा यह घिसा-पिटा बचकाना तर्क है। यदि तुम्हारे प्रदूषण वाले तर्क से ही सोचें तो सबसे पहले तो तुम्हारे इन अमीरजादों की गाड़ियों को शहर से बाहर कर दिया जाना चाहिए जो सबसे ज्यादा प्रदूषण का कारण बनी हुई हैं। अपनी एयाशी और शानोशौकत के लिए इन्होंने शहर को नरक बना दिया है। तुम्हारा न्यायतंत्र इस सम्बन्ध में क्यों खामोश है?

विक्रम : न्यायालय का फैसला उचित है। तुम एक ही पक्ष देख रहे हो।

बेताल : हां, मैं उस पक्ष को देख रहा हूं जिसे न तुम और न तुम्हारा न्यायालय देखते हैं। यदि प्रदूषण के लिए कारखाने में काम करने वाला मजदूर जिम्मेदार नहीं है तो उसे इसका दण्ड क्यों दिया जा रहा है? क्या तुम्हारी न्यायपालिका ने उस मजदूर को रोजगार की सुरक्षा की गारण्टी दी है, जो कारखानाबन्दी का शिकार हुआ है?

विक्रम : तुम्हारे मजदूर ही नहीं बल्कि कारखानेदार भी तो इस निर्णय से प्रभावित हुए हैं?

बेताल : कारखानेदारों का दर्द तुम्हारे सीने में बड़ी हूक पैदा कर रहा है क्यों राजन्? 'जो बोओगे, सो काटोगे' और फिर बड़ी मछली, छोटी मछली को तो खायेगी ही।

विक्रम : तुम फिर पहेलियां बुझाने लगे।

बेताल : जिन आर्थिक सुधारों की तुम वकालत करते हो राजन्, उसमें यही सब होना था, जो हो रहा है, प्रदूषण तो बहाना है। छोटी पूंजी को बड़ी पूंजी के लिए रास्ता छोड़ना ही होगा। फिर भी तुम्हारे ये कारखानेदार, जिन्होंने मजदूरों के खून की आखिरी बूंद भी निचोड़कर अपनी तिजोरी भरी है, बर्बाद नहीं हो जायेंगे। ये मजदूरों की तरह रोजी-रोटी के लिए सड़कों पर मारे-मारे नहीं फिरेंगे। इन्हें तो सरकार से मुआवजा भी मिल जायेगा और अपना धंधा दूसरी जगह चलाने के लिए सहूलियतें भी।

विक्रम : आखिर तुम चाहते क्या हो? पर्यावरण को ऐसे ही तबाह होने दिया जाये?

बेताल: नहीं। मैं जो कहना चाहता हूं, वह तुम्हारे लिए समझना मुश्किल है क्योंकि तुम तो चांदी की चम्मच मुंह में लेकर पैदा हुए हो। तुम्हें यह नहीं दिखाई पड़ रहा है कि पर्यावरण को तबाह करने वाले ही सबसे ज्यादा 'पर्यावरण बचाओ' का ढोल पीट रहे हैं। अमेरिका और विकसित देशों का गैंग तीसरी दुनिया के देशों को पर्यावरण तबाही का जिम्मेदार ठहराता है और तीसरी दुनिया के मुनाफाखोर जिम्मेदारी थोपते हैं अपने-अपने देश की आम जनता पर। साथ ही अपने कुकृत्यों पर पर्दा डालने के लिए पर्यावरण सुधार की बातें करते हैं।

विक्रम : तुम कुछ हवाई बातें कर रहे हो।

बेताल : हवाई? ओजोन परत में छेद का जिम्मेदार कौन है? किसके कारखाने, किसके संयंत्र, किसकी गाड़ियां प्रदूषण फैलाती हैं? कौन जंगलों को नष्ट कर रहा है? मुनाफे की हवस पर्यावरण का नाश कर रही है। अपनी तिजोरियों को भरने के लिए मुनाफाखोर कुछ भी करने को तैयार रहता है। ये कफनखसोट अपने मुनाफे के लिए इंसानियत को तबाह करने पर तुले हैं, इनसे पर्यावरण कैसे बच सकता है? और वह भी तब, जब आज पूरे राजकाज, समाज की कमान इन्हीं परजीवियों के हाथों में है। ये जैसा चाहते हैं वैसे नियम कानून बनाते हैं, आर्थिक नीति, शिक्षा नीति, पर्यावरण नीति सभी तो इनके हिसाब से बनती हैं।

विक्रम : तुम कहना क्या चाहते हो कि हमारी न्यायपालिका भी इन्हीं के हितों की रक्षा कर रही है?

बेताल : हां, बिलकुल।

विक्रम : तो तुम और तुम्हारे मजदूर अपनी दुनिया अलग क्यों नहीं बसा लेते?

बेताल : विक्रम तुमने स्पार्टकस का नाम सुना है? क्या तुमने रोम के गुलामों के विद्रोह की कहानी सुनी है? तुमने जरूर सुनी होगी वह कहानी जब गुलाम ने पहली बार कहा था कि मैं इंसान हूं। इंसानियत के संघर्ष के इतिहास से भी तुम परिचित हो। मैं जानता हूं - तुम विद्वान हो। गुलामों के विद्रोह से लेकर

(शेष पृष्ठ 48 पर)

बेताल पचीसी

(पृष्ठ 40 का शेष)

अब तक इंसान अन्याय और जुल्म के खिलाफ लड़ता रहा है। यह लड़ाई तब तक जारी रहेगी, जब तक इंसान द्वारा इंसान को गुलाम बनाने का सिलसिला चलेगा। आज भी यह लड़ाई चल रही है। गुलामों की सेनायें भी युद्ध हारती हैं, हारे हुए युद्धों से सबक लेती हैं, आगे के युद्धों की तैयारी में जुटती हैं। जिन मजदूरों को तुम्हारा "कल्याणकारी राज्य" उजाड़ रहा है, जिन छात्रों-नौजवानों की जिन्दगी को बरबाद कर रहा है, उनको और उनकी कौम को आप किसी दूसरे ग्रह में नहीं खदेड़ सकते, वे यहीं रहेंगे तुम्हारे संगमरमर के महलों के इर्दगिर्द। तुम्हें तुम्हारे पापों की सजा देने के लिए, और एक नये समाज के निर्माण के लिए जिसके केन्द्र में पैसा नहीं, इंसान हो।

विक्रम (झुंझलाकर) : मैं तुमसे बहस नहीं करना चाहता।

बेताल : राजन्। तुम्हारे पास मेरी बातों के जवाब नहीं हैं।

यह कहकर बेताल नजदीक आती 'ब्लू लाइन' बस में चढ़ गया और भीड़ में खो गया। ●

आह्वान यहां से प्राप्त करें

उत्तर प्रदेश ■ जनचेतना, जाफरा बाजार, गोरखपुर ■ विजय इन्फार्मेशन सेण्टर, कचहरी बस स्टेशन, **गोरखपुर** ■ विश्वनाथ मिश्र, नेशनल पी.जी. कालेज, बड़हलगंज, **गोरखपुर** ■ जनचेतना स्टाल, कॉफी हाउस के पास, हजरतगंज, **लखनऊ** (शाम 5 से 8.30 तक) ■ ओमप्रकाश, 69, बाबा का पुरवा (पुराना), पेपरमिल रोड, निशातगंज, **लखनऊ** ■ राहुल फाउण्डेशन, 3/274 विश्वास खण्ड, गोमतीनगर, **लखनऊ** ■ विमल कुमार, बुक स्टाल, नीलगिरि काम्प्लेक्स के सामने, इंदिरानगर, **लखनऊ** ■ कृष्णगोविन्द सिंह, बी-18, बिड़ला छात्रावास, बी.एच.यू., **वाराणसी** ■ प्रोग्रेसिव बुक सेण्टर, विश्वनाथ मन्दिर गेट, बी.एच.यू. परिसर, **वाराणसी** ■ शहीद पुस्तकालय, द्वारा डा. दूधनाथ, जनगण होम्यो सेवासदन, मर्यादपुर, **मऊ** ■ रविन्द्र कुमार, भारतीय जीवन बीमा निगम, **पन्तनगर (ऊधमसिंहनगर)** ■ अविनाश श्रीवास्तव, 73, पन्त भवन, **पन्तनगर विश्वविद्यालय, ऊधमसिंहनगर** ■ रामपाल सिंह, भारतीय जीवन बीमा निगम, **रुद्रपुर (ऊधमसिंहनगर)** ■ प्रो. प्यारेलाल, 139, फूलबाग कालोनी, **पन्तनगर** ■ राजेन्द्र प्रसाद, रेनु मेडिकल की गली, मुख्य सड़क, रेणुकूट, **सोनभद्र** ■ डी. के. सचान, कृषि विज्ञान केन्द्र, 243, विकास भवन, न्यू कलक्ट्रेट, **गाजियाबाद**

दिल्ली ■ सत्यम वर्मा, 81, समाचार अपार्टमेंट, मयूर विहार-फेज एक, **दिल्ली-91** ■ अभिनव सिन्हा, बी.ए.ऑनर्स-II (इतिहास), रामजस कालेज, **दिल्ली वि.वि.** ■ गीता बुक सेंटर, **जे.एन.यू.** ■ बुक कार्नर, श्रीराम सेंटर, **मंडी हाउस** ■ पत्रिका मंडप, कला संकाय, **दिल्ली विश्वविद्यालय** ■ नई किरण पुस्तक भण्डार, 56, हरकेश नगर, **ओखला, दिल्ली**

हरियाणा ■ नरभिंडर सिंह, शहीद भगतसिंह विचार मंच, हरियाणा, ग्रा./पो.**संतनगर**, जिला **सिरसा**

बिहार ■ पीपुल्स बुक हाउस, पटना कालेज के सामने, **पटना** ■ समकालीन प्रकाशन (प्रा. लि.), पुस्तक विक्री केन्द्र, आजाद मार्केट, पीरमुहानी, **पटना**

बंगाल ■ बुक मार्क, 6, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, **कलकत्ता** ■ जनार्दन थापा, लुकसान बाजार, पो. करेन, जि. **जलपाईगुड़ी** ■ सी.पी. सरोज, सनराइज स्कूल, छोटा अदलपुर, सेमलबाड़ी, **दार्जीलिंग** ■ राकेश गोरखा, सरस्वती पुस्तक मन्दिर, प्रधाननगर, **सिलीगुड़ी**

मध्य प्रदेश ■ चिंचोलकर बुक हाउस बस स्टैण्ड, जगदलपुर, बस्तर ■ विकल्प सांस्कृतिक मोर्चा, 22 स्वास्तिक काम्प्लेक्स, रसेल चौक, जबलपुर

महाराष्ट्र ■ पीपुल्स बुक हाउस, 15, कावसजी पटेल स्ट्रीट, फोर्ट, **मुम्बई**

राजस्थान ■ कविता, द्वारा योगेश कुमार, 94, मोहननगर (त्रिवेणीनगर), गोपालपुरा बाईपास, जयपुर ■ सुभाष शर्मा, 221, उत्तरी सुन्दरवास, गंगा फ्लोर मिल, उदयपुर

असम ■ शर्मा बुक स्टाल, थाना रोड, चराली, **तिनसुकिया**

नेपाल ■ विश्व नेपाली पुस्तक सदन, श्रवण पथ, बुटवल, रुपनदेई

S
SEC
C

मुगलसराय का गौरव

S
SEC
C

स्टूडेन्ट एजुकेशनल सेन्टर और स्टूडेन्ट कम्प्यूटर्स

मैनीताली (पुलिस चौकी के पास), मुगलसराय

कक्षा 8 से 12 तक

(यू.पी. बोर्ड एवं सी.बी.एस.सी. बोर्ड) एवं

कम्प्यूटर शिक्षण की एकमात्र संस्था

(डी.टी.पी., डी.सी.ए., डिजायनिंग एवं हर प्रकार के जॉब वर्क)

1990 से हर वर्ष 100 प्रतिशत रिजल्ट देने वाला एकमात्र सेंटर ● 60 प्रतिशत से अधिक छात्र प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण ● कमजोर आय वर्ग के छात्रों को विशेष छूट ● विज्ञान की आधुनिक प्रयोगशाला छात्रों के लिए उपलब्ध